OM-24 - 2021 FILE_Page 1 and 2 04/03/2021 10:43 PM Page 5

परिस्थिति में स्व स्थिति

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

संसार में 'योगी' और 'भोगी' तथा 'ज्ञानी' और 'अज्ञानी', मुख्यतः दो प्रकार के व्यक्ति तो होते ही हैं। किसी भी परिस्थिति में इन दोनों श्रेणियों के लोगों की भिन्न-भिन्न अभिव्यक्ति होती है। उससे हरेक व्यक्ति को स्वयं अपने बारे में भी कुछ बोध हो जाता है कि उसकी अपनी आन्तरिक स्थिति कैसी है और अब यदि उसे जीने की कुछ और अवधि मिले तो उसे क्या करना चाहिए। परिस्थितियाँ तो अनगिनत हैं, लेकिन यहाँ हम केवल 'व्याधि' या 'अस्वस्थता' रूप विशेष परिस्थिति में होने वाले कुछेक वृत्तियों, विचारों तथा व्यवहारों की चर्चा करते हैं।

बचूंगा या नहीं बचूंगा?

जब व्यक्ति पर अनायास ही किसी भी प्रकार की व्याधि उग्र रूप से आक्रमण करती है तो हो सकता है उसके मन में यह प्रश्न उठे कि - "क्या अब मैं बचूंगा या नहीं बचूंगा?" इसके साथ ही, बिस्तर पर पड़े होने पर उसके सामने प्रश्न आ सकते हैं कि "क्या मेरा जीवन निर्मल और सत्कर्म-युक्त एवं सेवारत बीता है या मैंने कोई गलत कर्म किये हैं? यदि उसने जीवन को आध्यात्मिक संहिता के अनुसार नहीं जीया तो उसके सामने चित्र आयेंगे कि उसने फलाँ-फलाँ गलत काम किये हैं। अगर उसने कुछ घटिया कर्म किये होंगे तो उसके मन में इच्छा उत्पन्न होगी कि थोड़े वर्ष और जीता रहूँ तो अच्छा होगा ताकि मैं अपनी कृति, व्यवहार और सम्बन्धों को ठीक कर लूँ। इस इच्छा के साथ उसे बचने न बचने की चिन्ता और मरने न मरने का डर भी होगा क्योंकि ठीक कर्म न होने के कारण उसे अपने भविष्य की चिन्ता और दण्ड प्राप्ति का भय होगा।"

परन्तु जो योगी है, तपस्वी है, ज्ञान-निष्ठ है, नियमों का पालन करता रहा है, लोक-कल्याणार्थ सेवा में लगा रहा है और पहले ही से सावधान रहा है, उसे न तो चिन्ता होगी, न भय। उसने तो पहले ही से बिस्तरा गोल कर रखा होगा। ऐसी स्थिति के लिए आवश्यक है कि पहले से ही अलबेलापन छोड़कर पुरुषार्थ किया जाये क्योंकि व्याधि न भी आये, जीवनान्त का तो कभी भी कोई अन्य भी कारण बन सकता है। अतः टाल-मटोल करने की बजाय, "अभी नहीं तो कभी नहीं" के सूत्र द्वारा दृढ़ता धारण करके यह ध्यान रखा जाए कि किसी समय भी पिया-पीयू के देश से बुलावा आ जाये तो ऐसे सोच-विचार न चलें बल्कि पहले से ही और सदा ही तैयारी हो।

यहाँ किसी का यह भी प्रश्न हो सकता है कि "ज्ञाननिष्ठ एवं योगी व्यक्ति के मन में यदि यह इच्छा हो कि मैं अधिक जीऊं ताकि इस सुहावने संगमयुग में प्रभु मिलन का अधिकाधिक आनन्द लूँ और अपना कर्म खाता भी योग बल से चुकता करते हुए जन-जन की आध्यात्मिक सेवा भी करूँ तो क्या आपत्ति है? यह तो सर्वश्रेष्ठ इच्छा है।"

एक दृष्टिकोण से तो ऐसे जीवन की इच्छा स्व-उन्नति की इच्छा है। किंतु योगी, जो कि परमपिता परमात्मा के प्रति पूर्णतः समर्पित है, उसके मन में यह इच्छा समर्पित भाव में आंशिक कमी की सूचक है। योगी का भविष्य तो परमपिता के हाथों में है; ईश्वर ने उसे आश्वासन दिया हुआ है कि तेरा कल्याण मैं करके ही रहूंगा। अतः उस सर्व-समर्थ के आश्वासन, वचन तथा उत्तरदायित्व को एक तरफ रखकर अपना राग अलापना कुछ भिन्न ही रीति-नीति है। परन्तु जहाँ प्रीति है, वहाँ शायद ऐसा चल भी सकता होगा। वास्तव में जब योगी अपना तन-मन-धन सर्वस्व परमपिता को दे देता है तो फिर उसके विषय में उसे सोचने या फरियाद करने की गुंजाइश कहाँ है! फिर, प्रायः ऐसा देखा गया है कि विकराल व्याधि आने के बाद भी योगी अथवा ज्ञानी को एक-दो अवसर तो मिलते ही हैं - दीर्घ काल के लिये हों या लघु काल के लिए। अतः ज़रूरत अवधि मांगने की नहीं है, तीव्र पुरुषार्थ करने की है।

क्या स्थिति देह से न्यारी रही?

विकराल व्याधि के समय जो विशेष परीक्षा सामने आती है, वह अपनी स्थिति के बारे में होती है। क्या देह से न्यारे रहे और साक्षी-दृष्टा तथा उपराम स्थिति बनी रही? पीड़ा से कराहने-चिल्लाने, दुःख-दर्द से रोने और हो-हल्ला मचाने की स्थिति रही या स्वयं को करुणाशील परमात्मा की छत्रछाया में या उसकी शीतल और सुखद गोद में महसूस करते रहे? क्या इन सोच-विचारों में रहे कि व्याधि क्यों आ गई और अब कब जाएगी या स्वयं को एक सुखद लाइट के घेरे में अनुभव करते रहे? व्याधि के समय कुछ थोड़ा कष्ट तो होता ही है परन्तु क्या सहन कर पाते रहे या डर और घबराहट अनुभव होते रहे? उस समय व्यवहार, चेहरा, बोल कैसे रहे?

सेवा या स्वास्थ्य-समस्या

व्याधि के अवसर पर दो प्रकार के विचार चलने की सम्भावना है। एक तो यह कि "मैं बीमार हूँ, कमज़ोर हूँ...।" दूसरा यह कि अब यह नये प्रकार से, नये स्थान पर नई सेवा है। व्याधि तो निमित्त 'बहाना' है। परन्तु जो डॉक्टर, नर्स, स्टाफ तथा मित्र सम्बन्धी या लौकिक-अलौकिक परिवार के लोग आयेंगे, उनकी सेवा का भी यह अवसर है। वह लौकिक को अलौकिक में परिवर्तन करके ईश्वरीय सन्देश देने में तथा लोगों का ध्यान, योग की ओर आकर्षित करने में ही लगा रहेगा। इससे उसकी अपनी स्थिति भी श्रेष्ठ रहेगी और नई सृष्टि की पुनः स्थापना का सन्देश भी लोगों को निरन्तर मिलता रहेगा। यह सेवा साहित्य द्वारा, स्नेह-भेंट द्वारा, प्रसाद द्वारा, सद्व्यवहार द्वारा तथा योग द्वारा और ज्ञान-चर्चा द्वारा भी हो सकती है।

यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि अब व्याधि के बाद जो जीवन काल मिला है, इसके विशेष महत्व को जाना जाए। वह स्वयं प्रभु से मिली हुई अमानत है। वह सांसारिक कार्यों में पड़े रहने के लिए नहीं दिया। अब तो यह स्वर्णिम अवसर है कि अधिक बलप्रद, आनन्दप्रद राजयोग का अभ्यास किया जाये, दिव्य गुणों की धारणा का भरसक पुरुषार्थ किया जाये और सन्तुष्टमणि बनने पर भी ध्यान दिया जाए। अद्भुत विश्व-लीला को साक्षी हो देखते हुए सदा हर्षित रहा जाए और अन्तर्मुखता, रूहानियत इत्यादि को धारण करते हुए लक्ष्य की ओर तीव्र गति से बढ़ा जाए। परिस्थिति में स्व-स्थिति बनाए रखने की यही विधि है।

सारनाथ-वाराणसी(उ.प्र.)। कैबिनेट मंत्री अनिल राजभर को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. बिपिन, ब्र.कु. रेखा, ब्र.कु. सरिता तथा ब्र.कु. निशा।

इंदौर-म.प्र.। पूर्व लोकसभा स्पीकर एवं सांसद सुमित्रा महाजन को ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा हो रही सेवाओं एवं गतिविधियों से अवगत कराते हुए ब्र.कु. दुर्गा,क्षेत्रीय संयोजिका,मीडिया प्रभाग,ब्रह्माकुमारीज़।

इन्दौर-म.प्र.। गणतंत्र दिवस के अवसर पर संस्था सेवा सुरभि, जिला प्रशासन एवं नगर निगम द्वारा आयोजित 'झंडा ऊँचा रहे हमारा' कार्यक्रम में ब्र.कु. हेमलता दीदी को शील्ड भेंटकर संस्था सेवा सुरभि द्वारा सम्मानित किया गया। इस मौके पर इंदौर के सांसद शंकर लालवानी, सेवा सुरभि के अध्यक्ष ओमप्रकाश नरेडा, ब्र.कु. अनिता, ब्र.कु. उषा तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

चेन्नई-तमिलनाडु। अन्नामलाई युनिवर्सिटी एवं ब्रह्माकुमारीज़ के संयुक्त तत्वाधान में सेंट्रल जेल,पुज़हल,चेन्नई में कैदी भाइयों के लिए आयोजित दीक्षांत समारोह में मंच पर डिग्री प्राप्त भाई-बहनों के साथ राजयोगी ब्र.कु. डॉ. मृत्युंजय,चेयरमैन,एजुकेशन विंग,ब्रह्माकुमारीज़,मा.आबू, डॉ. के. वेंकटचलपथी,डायरेक्टर,सेंटर फॉर योगा स्टडीज़, सेंथिल कुमार,जेल सुपरिटेंडेंट,जेल-1,पुज़हल, डॉ. ब्र.कु. पाण्ड्यामणि,डायरेक्टर,वी.ई.एस.,मा.आबू, डॉ. ब्र.कु. स्वाती, राजयोगिनी ब्र.कु. बीना बहन,क्षेत्रीय संयोजिका, ब्र.कु. देवी, ब्र.कु. पोंडिदेवी तथा अन्य।

खिलचीपुर-म.प्र.। शिवसागर हनुमान मंदिर में भागवत कथा के दौरान कथावाचक अलकनंदा जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. नीलम।

इंदौर-कालानी नगर। बी.एस.एफ. वाइव्स वेलफेयर एसोसिएशन के द्वारा आयोजित 'स्ट्रेस मैनेजमेंट' विषयक कार्यक्रम के दौरान मंचासीन हैं ब्र.कु. सुजाता, ब्र.कु. कविता, एसोसिएशन अध्यक्ष लता यादव तथा अन्य।

सीतापुर-सिधौली(उ.प्र.)। सांसद कौशल किशोर जी तथा उनके साथियों के सेवाकेन्द्र आगमन पर आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् समूह चित्र में साथ हैं ब्र.कु. योगेश्वरी तथा ब्र.कु. रश्मि।

जबलपुर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ एवं जबलपुर यातायात पुलिस विभाग के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित यातायात जागरुकता रैली को ब्र.कु. वर्षा बहन ने सम्बोधित किया। अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक डी.सी. सागर ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। रैली में भागवत सिंह चौहान, सिद्धार्थ बहुगुणा एस.पी., बड़ी संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनों सहित विभिन्न स्कूली बच्चों ने भाग लिया।

पटियाला-मॉडल टाउन(पंजाब)। ब्रह्माकुमारीज़ एवं श्री राधा कृष्ण मंदिर,मॉडल टाउन,पटियाला के सहयोग से आयोजित 'निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर एवं योग से रोग की मुक्ति विषयक मेडिटेशन शिविर' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए डॉ. अमित गोयल,सीनियर डेंटल सर्जन, डॉ. गरिमा गोयल,बी.डी.एस., डॉ. अंकित सिंगला,यूरोलॉजिस्ट एंड एंड्रोलॉजिस्ट, डॉ. बिन्दु गोयल सिंगला,चेस्ट,स्लीप एंड एलर्जी स्पेशलिस्ट, डॉ. अमरजीत रेखी,स्किन स्पेशलिस्ट, डॉ. नितिन टंडन,जनरल फिजीशियन, डॉ. अनिल गर्ग,आयुर्वेदिक, ब्र.कु. राखी तथा ब्र.कु. रमा।